eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 02, July 2024

थर्ड जेन्डर : यमदीप उपन्यास के सन्दर्भ में

डॉ0 प्रियंका रानी[1]
[1]सहायक प्रोफेसर– हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर।

Received: 20 July 2024, Accepted: 28 July 2024, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2024

Abstract

थर्ड जेन्डर के अन्तर्गत कौर सी प्रजाति आती है इस विषय पर पर्याप्त बहस हो चुकी है। कोई किन्नर को तो कोई हिजड़ों को थर्ड जेन्डर के अन्तर्गत गिनता है जबकि किन्नर और हिजड़ा दोनों अलग अलग प्रजाति है। इसी को 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

शब्द संक्षेप– हिन्दी साहित्य, थर्ड जेन्डर, यमदीप उपन्यास

Introduction

सन 2022 में यह उपन्यास सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ प्रकाशक ने एक दिन थोड़ा क्षोभ व्यक्त करते हुए बताया कि बिल्कुल अछूता विषय होने के कारण उसने ''यमदीप'' उपन्यास दिल्ली के एक शीर्षस्थ आलोचक को पढ़ने के लिए दिया तो कई महीनों तक उनकी कोई प्रतिक्रिया ही नही आई। कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ ''यमदीप'' का। कई नाट्य संस्थाओं ने पूरे उपन्यास का नाट्य मंचन विभिन्न शहरों में किया। सन् 2014 में ''यमदीप'' का मुख्य प्रतिपाद्य उददेश्य हिजड़ों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए शिक्षा, नौकरियों में आरक्षण प्रदान करने को बल देना था। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने यह अधिकार बिना किसी धरना प्रदर्शन या रेल–रोको आन्दोलन के प्रदान कर दिया। यह सब हुआ ''यमदीप'' उपन्यास लेखन के आठ–दस वर्षो के अन्तराल में। हिजड़ो पर पूरे देश में एक विमर्श सा खड़ा हो गया पर नामकरण हुआ 'किन्नर विमर्श'। विश्वविद्यालय और संस्थाओं मे सेमिनार और गोष्ठियाँ होने लगीं इस विषय पर तो कुछ प्रोफेसर्स ने शोध–कार्य करवाने भी शुरू कर दिये।

इस आपा–धापी और विमर्श का प्रणेता बनने के फेर में अधिकांश को यह भी विस्मृत हो गया कि हिजड़ा या तृतीय प्रकृति समुदाय के लिए प्रयुक्त ''किन्नर'' शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? दुखद है कि लेखकों के साथ–साथ आलोचकों और विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर्स ने भी हिजड़ों के लिए ''किन्नर'' शब्द का प्रयोग करना शुरू किया। वास्तव में किन्नर एक अलग जाति है। यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि की चर्चा प्रायः हम सुनते है। किन्नर हिजड़े नहीं होते। हिजड़ों के साथ एक प्राकृतिक क्रूर मजाक हुआ कहा जा सकता है। उनमें लैंगिक विकृति या विकलांगता पाई जाती है जो जन्मजात होती है। ''हम आसमान से तो नहीं टपके हैं न? आप ही की तरह किसी माँ की कोख से जन्मे हैं। हाड मांस का शरीर लिए। हमें तो अपने आप दुख होता है इस जीवन पर। आप लोग भी दुखी कर देते हो।''[1]

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 02, July 2024

बलात् न किसी को हिजड़ा बनाया जा सकता है और न किसी हिजड़े के स्वाभाविक विकास को स्त्री या पुरूष में रूपान्तरित किया जा सकता है। प्रकृति के आगे मनुष्य विवश हो जाता है। ''तन तो भगवान ने आधा टुकड़ा बनाया कि किसी लायक नहीं रहें। और पेट?––पेट तो नहीं बन्द करके भेजा। वह तो खुला ही है। रोज भरो, रोज खाली। उसे भी काटकर भेजता तो कम से कम बस जीना ही तो रहता। हमारे पेट की सुध किसे है? न सरकार को न जजमान को।''[2] भविष्य में हो सकता है कि गर्भ में ही इस प्रकार की विकृति की खोज करके उसका निदान किया जा सके, ऐसा विज्ञान आविष्कार करे।

तो पुनः चर्चा को ''किन्नर'' शब्द की ओर मोड़ती हूँ। प्रारम्भ में उद्धृत कविता की ओर मेरा ध्यान गया–यदि होता किन्नर नरेश मैं.....। किसी लैंगिक–विकलांग–हिजड़ों के लिए कब यह शब्द प्रयुक्त होने लगा, यह शोध का विषय है क्योंकि सन् 2002 में प्रकाशित इस उपन्यास ''यमदीप'' के प्रथम संस्करण की प्रतियों के फ्लैप प्रकाशक की ओर से लिखे दो शब्द में भी हिजड़ों के लिए ''शिखंडी समुदाय'' प्रयुक्त है परन्तु उसी ''यमदीप'' के दूसरे संस्करणों के फ्लैप मैटर पर प्रकाशक ने भी किन्नर शब्द का प्रयोग किया है जो बहुत स्वाभाविक और प्रचलन में भी है। हाँलाकि पूरे ''यमदीप'' उपन्यास में ''किन्नर'' के प्रयोग से स्वयं को लेखिका ने बचाया है।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में ''किन्नर'' शब्द का अर्थ लिखा है–''(1) एक प्रकार के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिनका मुख घोड़े के समान होता है। (2) गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।''

''किन्नरी'' शब्द का अर्थ किन्नर जाति की स्त्री और दूसरा अर्थ एक प्रकार का तम्बूरा या सारंगी है। वहीं रवीन्द्र प्रेस, मदरसा रोड, कष्मीरी गेट, दिल्ली से सन् 1990 में प्रकाशित ''शिक्षक हिन्दी शब्द कोष'' में भी ''किन्नर शब्द के दो अर्थ दिये गये हैं–(1) स्वर्ग के गायक (2) गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति। इसी शब्द कोष में ''हिजड़ा'' शब्द के भी दो अर्थ दिये गये हैं–(1) ऐसा व्यक्ति जिसमें प्राकृतिक रूप से स्त्री और पुरूष दोनों के कुछ कुछ लक्षण पाए जाएँ (2) नपुंसक।

किन्नरों के बारें में कुछ मोटी–मोटी बातें इसलिए भी प्रसंगतः यहाँ जान लेना जरूरी है ताकि हिजड़ों और किन्नरों का भेद जाना जा सके। एक प्राकृतिक रूप से शारीरिक विकृति के कारण समाज से उपेक्षित है तो किन्नर प्रकृति की गोद में रहते हुए जीवन–यापन की तमाम असुविधाएँ झेलते हुए भी स्वस्थ, सुन्दर और स्वाभावकि मनुष्य हैं। हिजड़ा और किन्नर में न कोई प्राकृतिक साम्य है, न भौगोलिक और न ही साहित्यिक। राहुल सांकृत्यायन अपनी पुस्तक ''किन्नर देश में'' लिखते है–

''किन्नर देवताओं का देश है, आलंकरिक नहीं सीधी भाषा में। देवता प्रकाश के प्राणी कह गये है, किन्तु मैं समझता हँ वह घोर अन्धकार के वासी हैं। जब तक जक मनुष्य के हृदय मे घोर अज्ञान न हो, देव लोग वहाँ ठहरना नहीं चाहते।''[3]

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 02, July 2024

यदि किन्नर का अर्थ हिजड़ा होता तो आज किन्नर (हिजड़ा) विमर्श के प्रथम प्रणेता राहुल जी होते। लेकिन ऐसा नहीं है।

हिमालय की गोद में किन्नर क्षेत्र में बसने वाले किन्नरों का जीवन मुश्किलों से भरा होता है। यहाँ के ऊपरी भूभाग में पानी के साथ साथ अन्न भी अपर्याप्त होता है। बकरियों और खच्चरों पर लादकर अपने सामानों को निचले क्षेत्र मे बेचना और वहाँ से अन्नादि जरूरी समान लादकर ऊपर क्षेत्र में ले आना यहाँ का सदियों से कार्य रहा है। सरकार का ध्यान अब इस उपेक्षित क्षेत्र की ओर भी गया है और आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ वहाँ भी पहुँचा पाने के प्रयास तेज हो गये हैं। साग–सब्जियों में आलू के साथ–साथ जौ, मक्का, चूली, मरसे की खेती भी होती है पर यह जीवका के लिए पर्याप्त नहीं होता इसलिए ठंड को देखते हुए मांस और द्राक्षासव का सेवन भी प्रचुर मात्रा में होता है। किन्नर लोग मधुमक्खी पालन भी करते हैं। पहले समय में ये अपने घरों की दीवारों का आधा भाग लकड़ी का बनाते थे और इसी में छोटे–छोटे छिद्र मधुमक्खियों के रहने के लिए बना दिये जाते थे। फूलों के मौसम में ये मधुमक्खियाँ बाहर भी अपना छत्ता लगा देती हैं और मधु संचय करती हैं। यह मधु भी किन्नरों के जीविकोपार्जन का साधन बनता है। तिब्बत देश की तरह याक, चमरी, पहाड़ी छोटी गाय और सांड़ों का पालन–पोषण भी किन्नर करते हैं। किन्नर क्षेत्र ठंडी जगह है। यहाँ मई–जून के महीने में भी माघ–पूस जैसी सर्दी पड़ती है। किन्नर पुरुष हल जोतने के श्रम के अलावा मुश्किल से अन्य काम करते हैं। शेष सभी कार्य किन्नर स्त्रियाँ करती हैं। किन्नर जाति में आज भी बहु पति विवाह प्रथा दिखाई पड़ती है। अर्थात् कई भाइयों की सम्मिलित पत्नी रहती हैं। यही प्रथा तिब्बत में भी आज तक है। एक से अधिक पत्नियाँ भी हो सकती हैं पर रहती हैं प्रायः सम्मिलित और वे स्त्रियाँ ही खेती तथा घर के भीतर की व्यवस्था सँभालती हैं।

किन्नर स्त्रियाँ जो अपना गाँव छोड़ बाहर नहीं गई हैं, वे अपनी भाषा ही समझ और बोल पाती हैं। हिन्दी भाषा उन्हें नहीं आती। हाँ, उनके समुदाय के पुरुष जो क्रय–विक्रय के सन्दर्भ में नीचे के मैदानी क्षेत्रों में भ्रमण करते हैं, वे हिन्दी भी जानते हैं। स्त्रियाँ ऊनी पतले कम्बल को पूरे शरीर पर इस तरह धारण करती हैं जैसे मैदानी क्षेत्रों में स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं। सिर छोड़कर उनका सारा शरीर ढँका रहता है। सिर पर वे पुरुषों की तरह ही टोपी लगाती हैं। किन्नर क्षेत्र से निचले भूभाग में रहने वाले लोगों को किन्नर "कोची" नाम से पुकारते हैं।

सांस्कृतिक रूप से किन्नर लोग बहुत समृद्ध हैं। हिमालय की सुरम्य गोद में बसे किन्नरवासी यहाँ की एक चोटी को ही "कैलास" मानते हैं और उसकी परिक्रमा करते हैं। अविवाहिता स्त्रियाँ राधा–कृष्ण का सजीव अभिनय करती हैं। किन्नरों की अपनी भाषा है जो मूल (किरात) भाषा के साथ–साथ संस्कृत भाषा और तिब्बती (भोट) भाषा से बहुत प्रभावित है। कोठी की देवी चंडिका सारे किन्नर क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। ये पहाड़ की देवी हैं और इनका अलग एक वंशवृक्ष है। किन्नर क्षेत्र के कई लोक कवि और कवयित्रियाँ हुई हैं। बनाछों और खइछो दो सगी बहने कवयित्रियाँ थीं जिन्होंने आज से कई दशकों पूर्व किन्नर की देवी चंडिका की महिमा का वर्णन करते हुए लोकगीत लिखा जो आज भी पूरे क्षेत्र में बहुत श्रद्धा के साथ गया जाता हैं। यह सत्य है कि किन्नर क्षेत्र के स्त्री–पुरुष संगीत और नृत्य में विशेष रूचि रखते हैं। युवावस्था तक प्रायः प्रत्येक किन्नरी नृत्य और

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Issue 02, July 2024

गीत में पारंगत हो जाती है यहाँ किसी गीत को कला की दुहाई देते हुए प्रचारित या संरक्षित नहीं किया जाता। उन गीतों का एक प्रवाह है जो अनवरन बहता रहता है। इस प्रवाह में किसी गीत की आयु प्रायः दस–पन्द्रह वर्षों की होती है। उसके बाद प्रायः नये जनगीत प्रचलन में आ जाते हैं। यह उनका सांस्कृतिक प्रवाह है। किन्नर गीतों में छन्द प्रायः छोटे है और गायक को ह्रस्व–दीर्घप्लुत करने की पूरी स्वतन्त्रता होती है जैसा कि हम भोजपुरी आदि के जनगीतों में पाते हैं। राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं कि–"किन्नर कंठ मधुर हैं, किन्नर गीत मधुर है, साथ ही वह अत्यन्त सरल और अकृत्रिम है। उसमें कोई उस्तादी कलाबाजी नहीं है।"[4]

इन सबसे ठीक उलट लक्षण और विशेषताएँ हम पाते हैं हिजड़ा समुदाय में। उनका स्वर कर्कश होता है। संगीत का व्यवस्थित ज्ञान न होने के कारण मात्र वे नेग वसूलने या ठनगन करके ग्राहकों से पैसे लेने के उद्देश्य से भोंडे स्वर में कुछ भी गाते हैं, तालियाँ बजाते हैं और हास–परिहास और उपहास का पात्र भी बनते हैं। हिजड़ा समुदाय विशेष रूप से हमारी संवेदना का पात्र होना चाहिए, उपहास या उपेक्षा का नहीं। हिजड़ा को किन्नर कहना और किन्नर–विमर्श करने की गलाकाट प्रतिस्पर्धा करने से पहले बौद्धिक समाज को थोड़ा ठहरकर सोचने, विचार करने की आवश्यकता है। ''किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़ा को पढ़ते–लिखते देखा है? किसी कुरसी पर हिजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्टरी में....किसी में भी? कोई आगे नही आयेगा कि हिजड़ा को पढाओं, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिये सरकार कर रही है।''[5] कम से कम शब्दों का सही प्रयोग तो करें। मुझे लगता है कि 'हिजड़ो' के लिए 'किन्नर' शब्द का प्रयोग इस इक्कीसवीं सदी की एक साहित्यिक भूल है। 'किन्नर' और 'हिजड़ा' शब्द का फर्क हम सबको समझना होगा। जैसे विकलांग को दिव्यांग कह देने मात्र से उस व्यक्ति की विकलांगता और उससे उपजी त्रासदी दिव्य अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेती उसी प्रकार हिजड़ा समुदाय की त्रासदी, सामाजिक अस्वीकार्यता, मूलभूत मानवीय अधिकारों से दूरी जैसी समस्याएँ, "किन्नर" कह देने से सुन्दरता या समृद्धि में परिवर्तित नहीं हो सकती। उसके लिए तो दूसरे ढ़ग के प्रयास करने होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. यमदीप, नीरजा माधव, पृ–50।
2. यमदीप, नीरजा माधव, पृ0–27।
3. यमदीप, नीरजा माधव, पृ0–59
4. यमदीप, नीरजा माधव, पृ0–44
5. यमदीप, नीरजा माधव, पृ0–94